1 भोजस्यौदार्यम

ततः कदाचिद् द्वारपाल आगत्य महाराजं भोजं प्राह 'देव, कौपीनावशेषो विद्वान् द्वारि वर्तते' इति। राजा 'प्रवेशय' इति प्राह। ततः प्रविष्टः सः कविः भोजमालोक्य अद्य मे दारिद्र्यनाशो भविष्यतीति मत्वा तुष्टो हर्षाश्रूणि मुमोच। राजा तमालोक्य प्राह– 'कवे, किं रोदिषि' इति। ततः कविराह– राजन्! आकर्णय मद्गृहस्थितिम्–

अये लाजानुच्चैः पथि वचनमाकर्ण्य गृहिणी
शिशौः कर्णौ यत्नात् सुपिहितवती दीनवदना।।
मयि क्षीणोपाये यदकृतं दृशावश्रुबहुले
तदन्तःशल्यं मे त्वमसि पुनरुद्धर्तुमुचितः।।

राजा शिव, शिव इति उदीरयन् प्रत्यक्षरं लक्षं दत्त्वा प्राह 'त्वरितं गच्छ गेहम्, त्वद्गृहिणी खिन्ना वर्तते'। अन्यदा भोजः श्रीमहेश्वरं नमितुं शिवालयमभ्यगच्छत्। तदा कोपि ब्राह्मणः राजानं शिवसन्निधौ प्राह–देव!

अर्द्धं दानववैरिणा गिरिजयाप्यर्द्धं शिवस्याहृतम्
देवेत्थं जगतीतले पुरहराभावे समुन्मीलति।।
गङ्गा सागरमम्बरं शशिकला नागाधिपः क्ष्मातलम्
सर्वज्ञत्वमधीश्वरत्वमगमत् त्वां मां तु भिक्षाटनम्।।

राजा तुष्टः तस्मै प्रत्यक्षरं लक्षं ददौ। अन्यदा राजा समुपस्थितां सीतां प्राह— 'देवि! प्रभातं वर्णय' इति। सीता प्राह–

विरलविरलाः स्थूलास्ताराः कलाविव सज्जनाः
मन इव मुनेः सर्वत्रैव प्रसन्नमभून्नभः।।
अपसरति च ध्वान्तं चित्तात्सतामिव दुर्जनः
व्रजति च निशा क्षिप्रं लक्ष्मीरनुद्यमिनामिव।।

राजा तस्य लक्षं दत्त्वा कालिदासं प्राह— 'सखे, त्वमपि प्रभातं वर्णय' इति। ततः कालिदासः प्राह–

अभूत् प्राची पिङ्गा रसपतिरिव प्राप्य कनकं
गतच्छायश्चन्द्रो बुधजन इव ग्राम्यसदसि।
क्षणं क्षीणास्तारा नृपतय इवानुद्यमपराः
न दीपा राजन्ते द्रविणरहितानामिव गुणाः।।

राजातितुष्टः तस्मै प्रत्यक्षरं लक्षं ददौ।

(भोज प्रबन्ध)

अभ्यास प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

१. द्वारपालः भोजं किं अकथयत्? **[2017 MG, 19 CN, CO, CP, CQ, 20 ZB, ZC]**
२. भोजं दृष्ट्वा कविः किं अचिन्तयत्?
३. भोजः कविम् किं अपृच्छत्? **[2016 SK, 17 MK, 19 CR, 20 ZF]**
४. विदुषः ब्राह्मणस्य पत्नी कथम् दुःखिनी आसीत्?
५. राजा भोजः कालिदासं किं कर्तुं प्राह? **[2018 AH]**
६. भोजः कालिदासाय किं पुरस्कारं ददौ?
७. कविः कथम् अरोदीत्? **[2017 MM, 19 AL]**
८. निशा कथमिव क्षिप्रं व्रजति?
९. भोजस्य सभायां कः कविः प्रभातवर्णनम् अकरोत्?

व्याकरणात्मक प्रश्न

१. निम्नलिखित अवतरणों का ससन्दर्भ हिन्दी-अनुवाद कीजिए–

(क) अभूत प्राची ..... गुणाः। **[2017 MI, MJ, 20 ZB, ZG]**
(ख) अये ..... पुनरुद्धर्तुमुचितः। **[सा०2020 ZH, ZJ]**
(ग) अर्द्धं ..... भिक्षाटनम्। **[सा०2020 ZL, ZM]**
(घ) विरलविरलाः ..... लक्ष्मीरनुद्यमिनामिव। **[2015 CR, 20 ZA, सा०20 ZI, ZN]**
(ङ) गङ्गा सागरम्बरं ..... भिक्षाटनं।
(च) क्षणं ..... गुणाः। **[सा०2020 ZK]**
(छ) ततः कदाचिद् ..... हर्षाणिमुमोच। **[2017 MH]**

२. निम्नलिखित सूक्तिपरक वाक्यों की ससन्दर्भ हिन्दी-व्याख्या कीजिए–

(क) व्रजति च निशा क्षिप्रं लक्ष्मीरनुद्यमिनामिव।
(ख) न दीपा राजन्ते द्रविणरहितानामिव गुणाः।
(ग) गतच्छायश्चन्द्रो बुधजन इव ग्राम्यसदसि।

३. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) राजा ने कवि से पूछा।
(ख) महाराज ने शिवजी को प्रणाम किया।
(ग) राजा भोज ने कालिदास को एक लाख दिया।
(घ) अंधकार दूर हो रहा है।
(ङ) विद्याधन सब धनों में प्रधान है।

व्याकरणात्मक प्रश्न

१. **निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए–**
क्षीणोपाये, कलाविव, स्थूलास्ताराः, यदकृत।

२. **निम्नलिखित शब्दों का वाक्य-प्रयोग कीजिए–**
वर्तते, प्राह, दत्त्वा।

शब्दार्थ

मत्वा = मानकर। **सुपिहितवती** = बन्द कर लिया। **उदीरयन्** = कहते हुए। **पुरहराभावेर** = शंकर जी का अभाव होने पर। **लाजा** = धान की खील (लावा)। **शल्य** = पीड़ा। **उद्धर्तुमुचितःर**= निकालने में समर्थ। **मन इव ..... नभः** = प्रातःकाल होते ही सर्वत्र आकाश मुनि के मन के समान स्वच्छ हो गया। **ध्वान्तम्** = अन्धकार। **प्रसन्नम्** = स्वच्छ, निर्मल। **व्रजति च ..... अनुद्यमिनामिव** = आलसी पुरुष के धन की भाँति निशा शीघ्र ही समाप्त हो रही है। **क्षिप्रम्** = शीघ्र। **पिङ्गा** = पीली। **विरलविरलाः** = कोई-कोई। **स्थूलाः** = बड़े (मोटे)। **कलाविव** = (कलौ + इव) जैसे कलियुग में। **सर्वत्रैव** = (सर्वत्र एव) सभी जगह। **प्रसन्नमभून्नभःर**= (प्रसन्नम् + अभूत् + नभः) आकाश निर्मल हो गया। **अपसरति** = दूर हो रहा है या हट रहा है। **चित्तात्सतामिव** = (चित्तात् सताम् + इव); **इव** = जैसे, **सताम्** = सज्जनों के, **चित्तात्** = चित्त से। **इवानुद्यमपराः** = (इव + अनुद्यमपराः) अनुद्यमियों की तरह (नृपतयः का विशेषण)। **राजन्ते** = चमक रहे हैं। **द्रविणरहितानाम्** = धनहीनों के।